पीयर आँकुर

से, ओ खूब विशाल ढेङ छल। कतोक दिनसँ पड़ल। बेस चाकर-चौरस आ' भरिगर। से ढेङ सहसा उठा लेल गेल। देखैत छी ओकरा तरमे मुरछायल, मरइमान पीयर-पीयर घास आ कते तरहक सुन्नर-सुन्नर बीज़क पीयर-पीयर आँकुर। मुदा सभटा मिरमिराइत। आलोक लेल बेलल्ला भेल। आइ जखन ओ ढेङ हटि गेलैक तँ आँकुर सभ टुकुर-टुकुर ताकि रहल अछि आब एहिसभमे नवजीवनक संचार होयतैक। ई आँकुरसभ आलोक पाबि सबल होयत आ रंग-बिरंगक पत्र-पुष्प आ फलक संग प्रकट होयत।

की एहिना युग-युगक दासत्वक ढेङ हमरालोकनिक धरतीक प्रवृत्तिक आँकुरकेँ नहि दबने रहल? की हमरा लोकनिक जन-समाजक उच्च भावनाक आँकुर आलोकक लेल बेलल्ला होइत युग-युगसँ मिरमिराइत रहल?

ई धरतीक प्रवृत्ति की! आ ओकर आँकुर ककरा कहब? गेल छलहुँ एक बेर सरकस देखबाक हेतु। बाघ-सिंह आदि हिंस्त्र पशुक बड़ भयानक खेल देखलहुँ। रस्सापर शून्यमे बड़-बड़ डेराओन तमाशा देखल। मोटर साइकिल, घोड़सवारी आ' अस्त्र-संचालनक एहन दृश्य आँखिक आगूमे आयल जकरा मोन पाड़ि एखनो काँपि जाइत छी। उत्सुकतावश सरकसिया लोकनिक परिचय बुझलहुँ तँ ज्ञात भेल जे सभ मराठी छलाह-गोट-गोटक'।

महाराष्ट्रक भूमिका वीरताक प्रवृत्ति, गुलामीक ढेङ तर दबि सरकसक खेलक रूपमे प्रकट भ' रहल छल। वीरताक एहि प्रवृत्तिकेँ जखन उपयुक्त वायु, प्रकाश नहि भेटि सकलैक तँ ओ लोककेँ बाघ-सिंहक भयानक खेल क' सन्तुष्ट होयबा लेल बाध्य कयलक। मुदा, ओ वीरत्वक भावना मुइल नहि छल, केवल विकासक सुविधाक अभावमे सिर-सिराइत छल। ओहू गुलामीक ढेङ तर जँ दोग-दाग भेटि गेलैक तँ भगवान तिलक-सनक व्यक्तित्व आलोकक अन्वेषणमे बहराइत, प्रयत्न करैत होमरूल आन्दोलन आ' गीता रहस्य सन पुष्प आ' फूल देलथिन।

ओएह सुनू सैनिकक बिगुल। 'राइट-लेफ्ट' प्रारम्भ भ' गेल। गोरखा फौज कवायद क' रहल अछि। बाघ-भालु, उभड़-खाभड़, चोटी-घाटी आ' बोन झाड़क भूमि हिनकालोकनिमे असीम साहस भरने अछि। हिनकामे अनुशासनक भावना एहि कोटिक अछि जे संसारमे कम्मे ठामक लोक हिनकासभसन आदर्श सैनिक भ' पबैत अछि। मुदा विकासक असुविधाक ढेङ तर पिलपिलाइत हिनका चपरासी, दरबान, संतरी होटलक नोकर आ' साम्राज्यवादी अंग्रेजक सैनिक बनि संतोष कर' पड़ैत छनि।

आ' लगक बात थिक। चन्द्रगुप्तक वाहिनीक जे सैनिक, विश्व-विजयिनी ग्रीक सेनाकेँ पराजित कयलक' जत'क वीरलोकनि तरुआरि, समुद्रगुप्तक नेतृत्वमे समस्त आर्यावर्तमे चमकल जत'क वीर-भावना शेरशाहक आगू-आगू चलि दिल्ली पर विजय पओलक, जाहिठामक स्वातंत्र्य-प्रियता सन सत्तावनमे वीर कुँवर सिंहक कंठसँ रणहुँकार बनि प्रकट भेल, ओहि आरा, छपरा आ' पटना जिलाक सैनिक भावनाक आँकुर परतन्त्रताक ढेङ, तर तेना दबकल रहल जेना हुनकालोकनिकेँ कान्सटेबुल, जमादार दरबानजी आ' जमीन्दारक मजबुरी सिपाही बनवा लेब बाध्य होम' पड़ल।

मध्यप्रदेशक एकटा गाममे छलहुँ। किछु साहित्यिक बन्धुक अनुरोधपर रामलीला देख' गेलहुँ अरे, ई की? रामलीलाबला तँ सभ केओ गौआ-घरूआ छलाह अपना जवारक लोक। गामपरक महिष-मोढ़सभक मुँहसँ आन प्रान्तक स्टेजपर गीतगोविन्द, विद्यापति तिरहुता आ' बटगवनी सुनि, आन भाषा-भाषीकेँ मुग्ध भ' भ' लोटि लसैति देखलहुँ। नयनाभिराम एक्टिंग, कोकिल-कंठ, साधारण स्टेज, कुल तीन चिरी- चौँत भेल परदा, बिनु स्कूलक मुँह देखने एक्टर, जर्जर वेश-भूषा मुदा, हजार-हजार दर्शकक मन्त्रमुग्ध भीड़।

मिथिला माँटि-पानिमे युग-युगसँ साहित्य, कला आ' दर्शनक बीज संचित छैक। जहिया कहियो विकासक सुविधा भेटलैक ओ बीज वृक्ष बनि अयाची, मंडन, वाचस्पति, उदयनाचार्य आ'विद्यापतिक रूपमे पत्र-पुष्पसँ युक्त भेल। दर्शन, कला ओ साहित्यक फल तकरे परिणाम थिक।

मुदा, गुलामी आ' प्रतिकूल वातावरणक दाबनि पड़ि गेलासँ ओहि अमर बीजसभक आँकुर पीयर पड़ि गेलैक तथा ओकर बाढ़ि अवरुद्ध भ' गेलैक अछि।

विकसित नहि होयबाक कारण ओ रामलीलावला नटकिया, भनसीया, कीर्त्तनियाँ आ' कथावाचक रूप ल' लेलक तथा एहि भूमिक चित्रकला कोबरक भीतपर कनैत रहि गेल, नृत्यकलाकेँ मनचुम्भी आ'जालिमसिंहक रूप लेम' पड़लैक, साहित्य एकर नारीक कंठसँ समदाउनि बनि कानि उठलैक, संगीत ओकर डोमक ओढ़नीक स्वरमे कुसुमा दीनाक विलाप बनि चित्कारक' उठल, ज्योतिष एकादशी ओ अतिचारक निर्णय करैत कुण्ठित भ' गेलैक आ' दर्शक श्राद्धस्थलीमे शास्त्रार्थ करैत हपस' लगलैक।

अहाँक की विश्वास अछि?-एकटा वृद्ध विद्वानकेँ पुछलियनि स्वतन्त्र भारतकेँ मिथिलाक की देन होयतैक?

वृद्ध मुस्कायला जँ विकासक समुचित अवसर भेटय तँ मिथिलाक धरतीक ई आँकुरसभ कवि, दार्शनिक, अभिनेता, लेखक, चित्रकार ओ कलाकारक रूपमे प्रस्फुटित भ' उठत। फेर एकर पुष्पक मधुर गन्ध संसार भरि व्याप्त भ' उठत।

ओ कनिय ठमकिक' कहलनि-सभसँ बेसी प्रगति करती मैथिलानी। सीता, गार्गी आ' भारतीय परम्परा नष्ट नहि भ' गेलैक अछि-केवल सुषुप्त छैक। ओकरा जाग्रत होयबामे कनियो काल नहि लगतैक।

अंग्रेजसभ विभिन्न स्थानक माँटि-पाँनिक एहि आँकुर विशेषकेँ बहुत हद धरि चिन्हैत छल। ओ एहि स्थानीय विशेषतासँ अपन ढंगपर उठओलक। सिक्खकेँ भारतक खड्गहस्त, गोरखाकेँ राइफलधारी, भोजपुरोकेँ पुलिस, मद्रासक शास्त्रधुरणीकेँ आइ॰ सी॰ एस॰, बंगालक भद्रलोकनिकेँ किरानी आ' स्टेशनमास्टर बनओलक। मुदा ठोकि-ठाकिक' ओतबे दूर धरि उठबाक अवसर देलकनि जते दूर धरि ओ ओकरा लेल उपयोगी भ' सकतथि। हँ, ई भिन्न बात जे एहि देशक संस्कृतिक जड़ि दर्शनक माँटिमे एतेक गँहीर तक गेल छलैक जे एहू विपन्न स्थितिमे महात्मा गाँधी, महाकवि

टैगोर, महावैज्ञानिक रमण आ महादार्शनिक राधाकृष्णनक आविर्भाव भ' सकल, जखन कि आन उपनिवेश-अफ्रीका, आस्ट्रेलिया आ कनाडा सन देश एको टा उल्लेखनीय कवि, कलाकार, वैज्ञानिक आ दार्शनिक नहि द' सकल।

मुदा, आइ तँ अंग्रेज नहि अछि। गुलामीक भरिगर ढेङ आब हटि गेल अछि। देखैत छी ओकरा सुन्नर-सुन्नर बीजक आँकुर युग-युगसँ अन्हारमे रहैत-रहैत कनेक अधिक पीयर पड़ि गेल अछि, पिरपिरा रहल अछि।

एहि आँकुर सभ लेल आलोक चाही जल चाही आ खाद चाही से कोना प्राप्त होयतैक? सभसँ पहिने समाजमे ई चेतना चाही जे आलोक, जल आ खादक अभावमे ई आँकुरसभ नष्ट भ' जायत। बिना उपयुक्त वातावरण नहि भेटने ओकरा विकास नहि भ' सकतैक।

एहन आँकुरसभक विकासक लेल सभसँ आवश्यक छैक स्थानीय विश्व-विद्यालयसभक, जाहिमे ओहिठामक विशेषतासँ युक्त विषयकेँ सभसँ अधिकतम प्रोत्साहन देल जा सकय। मगध विश्वविद्यालयमे सैनिक विषयक प्रमुख आ मिथिला विश्वविद्यालयमे कला आ' दर्शन विषयक प्रधानता, नहि जानि कतेक कते 'महान' केँ उत्पन्न क' सकत।

हमर कथनक ई अर्थ कथमपि नहि जे मिथिलामे करियप्पा अथवा नेपालक गोरखामे विद्यापति नहि भ' सकैत अछि। मानव अद्‌भुत आ' असाधारण जीव थिक। ओ कत', कखन आ' कोना कोनरूपमे अपन विकास करत से कहब कठिन। मुदा, विभिन्न माँटि-पानिमे जे स्थानीय विशेषता होइछ तकरा अस्वीकार नहि कयल जा सकैछ। केरलक नारिकेर कुंज आ मिथिलाक आम्रवन अपन-अपन विशेषताक सहज परिणाम थिकैक। ई के कहत नहि?

से ओएह देखियौक ने कला, साहित्य ओ दर्शनक अमर बीज पीयर-पीयर आँकुर। पिलपिलाइत, क्षीण आ मौलायल-जेना चिकरि-चिकरि कहि रहल हो-स्थान, अधिक स्थान चाही, आलोक, अधिक आलोक चाही।

□□□